# ब्रह्माकुमारीज़ ने भारत की परंपरा को संजो कर रखा

माउण्ट आबू में सेवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय सम्मेलन

## सर्व समस्याओं के समाधान की कुंजी अध्यात्म

**ज्ञानसोवर।** राज्यसभा सांसद भूपिंदर सिंह गिल ने कहा कि मैं यहाँ एक छात्र के रूप में ज्ञान का अर्जन करने आया हूँ। आपके पास ज्ञान का भंडार है जिसे समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने की आवश्यकता है। विश्व शांति, प्रेम, भाईचारे का लक्ष्य लेकर यह संस्था कार्य कर रही है। दूसरों के चेहरे पर हँसी लाना यह सबसे बड़ी ज़िम्मेवारी है। ब्रह्माकुमारी संस्था ने भारत की परंपरा को संजो कर रखा है। शांति और मूल्यों को बचाकर आप समाज में व्याप्त बुराइयों को निकालने की सेवा कर रही हैं।

**रोटरी क्लब के डिस्ट्रीक्ट गवर्नर दर्शन सिंह गांधी** ने कहा कि यहाँ आने के पश्चात जिस प्रकार की शांति की अनुभूति हुई है वह अपने कार्यस्थल पर कभी नहीं हुई। मैं ऐसा महसूस कर रहा हूँ जैसे कि परमात्मा के रचे परवानों के मध्य हूँ। आप दुनिया के 140 देशों में दस हज़ार शाखाओं के माध्यम से सुख शांति के लिए सेवा का कार्य कर रहे हैं। आपके इन सेवाकार्यों के लिए दुनिया को आपके सामने नत-मस्तक होना चाहिए। शांति कहीं से खरीदी नहीं जा सकती मगर अध्यात्म के अभ्यास से प्राप्त की जा सकती है।

सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. संतोष के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथिगण।

**समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.संतोष** ने कहा कि अध्यात्म रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर विश्व से अज्ञान व बुराइयों का अंधकार मिटता जा रहा है। ज्ञान का तीसरा नेत्र जीवन को ही सुवासित कर देता है। जगे दीपक को सभी नमन करते हैं लेकिन बुझे दीपक के आगे कोई अपना सिर नहीं झुकाता, उसी प्रकार जागती ज्योत बनकर संसार में जीने वाला सम्मान का पात्र बनता है। जिस प्रकार घर में उजाला करने से पूर्व किचड़े को निकाला जाता है, उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश हमारे अंदर तभी फैल सकता है जब बुराइयों व गलत संस्कारों का किचड़ा हमारे अंदर से निकल जाए। प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.अमीर चंद ने कहा कि वास्तव में दुनिया ही अपना परिवार है। हम सभी को अपने परिवार का सदस्य मानकर अपना लें, यही सच्चा अध्यात्म है।

**एस.टी.और वित्त तथा विकास निगम, भोपाल के अध्यक्ष भूपेन्द्र आर्य** ने कहा कि राजनीति बहुत ही अनिश्चय की दुनिया है। मेरी शांति की तलाश पूरी हुई जब टीवी पर ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यक्रम देखने आरंभ किए। हमारे द्वारा की जा रही सेवा में स्वार्थ हो सकता है लेकिन इस संस्था द्वारा की जा रही सेवाएं सच्ची व निःस्वार्थ हैं। भगवान अपने कार्य के लिए अच्छे लोगों को ही चुनता है। जीवन के लिए राजयोग मेडिटेशन ज़रूरी है। सेवा फैशन नहीं है बल्कि डिवोशन है, और डिवोशन तभी आयेगा जब आपके जीवन में आध्यात्मिकता होगी। अध्यात्म, योग व समाज सेवा का अद्भुत मिश्रण हैं देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी। वे भी बुराइयों की समाप्ति के लिए कार्य कर रहे हैं। लेकिन मैंने यहाँ आकर देखा तो लगा कि अध्यात्म में वो शक्ति है जिससे सर्व समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। बस हमें साथ मिलकर कार्य करना होगा।

# यहाँ होता आध्यात्मिकता द्वारा परिवर्तन

**ज्ञानसरोवर। समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'कानून में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता की भूमिका' विषय पर गुलाब कोठारी ने कहा कि...** सुखद संयोग है मैं आप तक पहुंचा। दुनिया में हज़ारों पीस कान्फ्रेन्स होती हैं लेकिन पीस कहीं दिखाई नहीं देती। समाज के हर क्षेत्र में ही तनाव बढ़ रहा है। उसके कारण ढूंढ़ने में हम जिन बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं वे बिन्दु डालियां या पुष्प पर ही चर्चा लगती हैं, लेकिन समस्या की जड़, बीज या ज़मीन की बात नहीं करते।

आध्यात्मिकता में हम आत्मा की बात करते हैं, संस्कार की बात करते हैं, स्वयं के रूपांतरण की बात करते हैं। नर से नारायण बनने की बात करेंगे। आध्यात्मिकता में आंतरिक बातों की समझ है।

### आज की शिक्षा पद्धति में सुसंस्कारों के सिंचन की ज़रूरत

पूर्व में बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के कार्य में गुरूकुल व गुरूओं का योगदान प्रमुख होता था। शरीर व बाह्य विषयों की जानकारी के साथ मन व आत्मा के विषय पर अनुभव कराया जाता था। लेकिन वर्तमान शिक्षा पद्धति समस्याओं को और जटिल बनाती जा रही है। वह आग में घी डालने का काम कर रही है। किसी को अच्छा इंसान बनने नहीं देती। बाल्यकाल के श्रेष्ठ संस्कार व प्रारब्ध से प्राप्त स्वभाव को भी आज की शिक्षा भुला देती है। एम.ए. या पी.एच.डी. करने के बाद छात्र जो संस्कार बचपन में लेकर आया था या जो लक्ष्य साथ था वह भी भूल जाता है। उसका सारा प्रयास बस पेट भरने के लिए कमाने पर केन्द्रित हो जाता है। धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी इंसान केवल पेट भरने के लिए बीस वर्ष तक पढ़ाई करता है, अपने बाप की सारी पूंजी भी खर्च कर देता है, फिर भी एक अच्छा इंसान नहीं बन पाता। एक ज़माना था जब इतने स्कूल या कालेज नहीं थे, गुरूकुल होते थे राजाओं की संतानें भी वहां शिक्षा लेने जाती थीं। वहां व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाने का कार्य किया जाता था। पहले माँ-बाप अपने बच्चे के आचरण में गुणवत्ता की ज़रा भी कमी बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। वे उसके चरित्र में या संस्कारों में उच्चता ही देखना चाहते थे। छोटी सी गलती पर भी उसके कान पकड़े जाते थे। आज मां-बाप व बच्चों के बीच संवादहीनता की स्थिति पैदा हो चुकी है। वह दिल का संप्रेषण लुप्त हो गया है। आज माँ अपनी बेटी को श्रेष्ठ स्वभाव व संस्कारों से शिक्षित नहीं कर पाती, वह उसे ससुराल में जाकर किस क्षमता से अपना उत्तरदायित्व सम्भाले वह शिक्षा नहीं दे पाती।

### सम्पूर्ण शिक्षित करना होगा

आज की नये प्रकार की मीडिया इंटरनेट, फेसबुक व टीवी से भ्रमित है। अब इंटरनेट व टीवी उसके शिक्षक बन गये। शिक्षक भी अब उतने प्रासंगिक नहीं रहे। वे भी बस स्कूलों व कॉलेजों में विषय पढ़ाकर अपना उत्तरदायित्व पूरा समझ लेते हैं। उन्हें शिष्यों के जीवन से मतलब नहीं रहा। शिक्षा में भी शरीर व बुद्धि की चर्चा है लेकिन मन व आत्मा के बारे में नहीं समझाया जाता है। मन को शांत व सकारात्मक बनाने का प्रशिक्षण नहीं है। इंसानियत की चर्चा नहीं है। मन, बुद्धि, आत्मा व शरीर की शिक्षा से पूरा विकास होगा। तब ही आदमी पूर्ण रूप से विकसित माना जायेगा।

जिस प्रकार घड़े में पानी भरने से पूर्व घड़े को अच्छी तरह से पकाना पड़ता है, उसी प्रकार समाज को सुसंस्कृत बनाने के लिए उसे सम्पूर्ण शिक्षित करना पड़ेगा। समाज को तैयार करना होगा परिवर्तन के लिए। यहाँ हमें खुद को समझने की ज़रूरत है। हम शब्दों को पकड़ रहे हैं विषयों को नहीं।

### यहाँ संस्कृति में आध्यात्मिकता लाने की कोशिश सराहनीय

नई पीढ़ी में भारतीय संस्कृति का नहीं बल्कि पश्चिमी संस्कृति का आकर्षण बढ़ रहा है। नई पाढ़ी आज अपनी संस्कृति का पालन कर नहीं रही। यहाँ संस्कृति में आध्यात्मिकता लाने की कोशिश सराहनीय है।

अगर आत्मीय धरातल पर उतरकर सेवा करें तो ही सच्ची सेवा है, नहीं तो सब ऊपरी सेवा ही कही जायेगी। सब अपने महसूस हों कोई पराया नहीं। मन से सर्व के साथ जुड़कर ही सच्ची सेवा की जा सकती है। तभी ईश्वर के साथ की महसूसता होगी।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th July 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।